● **सुनो, समझो और लिखो :**

११ सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा

प्रस्तुत निबंध में सार्वजनिक एवं राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा में नागरिकों की भूमिका के प्रति उनमें चेतना जागृत की गई है ।

*** चित्रों को देखकर दर्पण में दिए गए मुहावरों/कहावतों को पढ़ो तथा नीचे दी गई चौखट में लिखो ।**

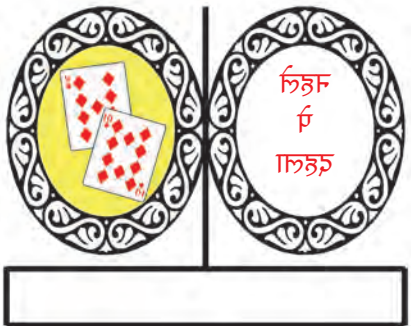

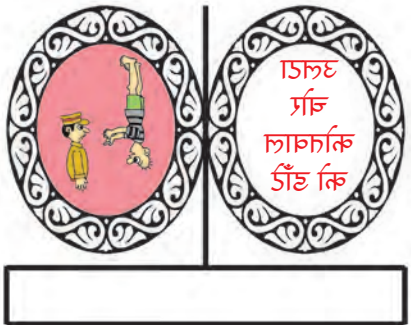

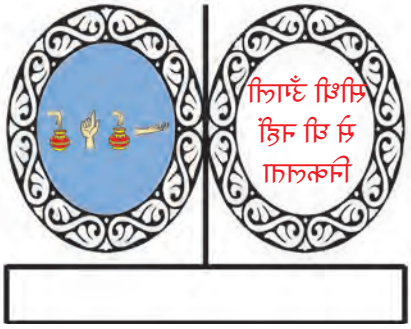

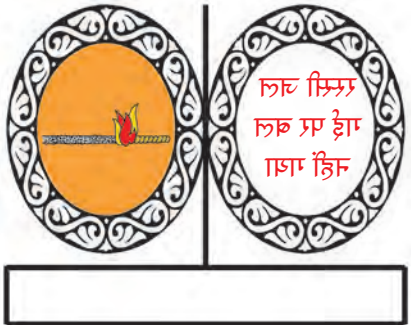

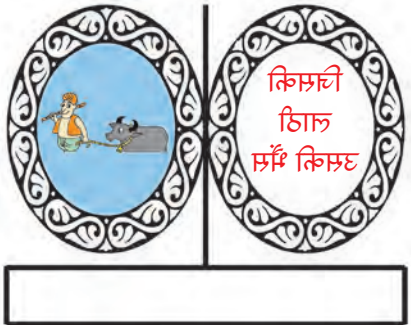

संपत्ति चाहे व्यक्तिगत हो या सार्वजनिक, वह मूल्यवान ही होती है । एक गरीब की घासफूस की कुटिया उसके लिए उतनी ही मूल्यवान होती है जितनी किसी धनी व्यक्ति के लिए उसकी हवेली । रही बात सार्वजनिक संपत्ति की तो, वह तो सार्वजनिक है, सभी की है, समूचे राष्ट्र की है । उसकी देखभाल की जिम्मेदारी मेरी, तुम्हारी या किसी एक व्यक्ति की नहीं अपितु सभी नागरिकों की है । वास्तव में वह हम सभी नागरिकों की इसलिए है क्योंकि हम सभी उसका उपयोग और उपभोग करते हैं । उस संपत्ति का निर्माण ही सारे नागरिकों की सुविधा के लिए किया गया है । ऐसी सार्वजनिक राष्ट्रीय संपत्ति के रख-रखाव के लिए जितने धन की आवश्यकता होती है, वह विविध करों के रूप में सरकार देश के नागरिकों से ही वसूल करती है ।

यह कितनी खेदजनक स्थिति है कि हमारे अधिकांश नागरिक आज भी इस वास्तविकता को गंभीरता से नहीं समझ पाए हैं कि सार्वजनिक संपत्ति भी उतनी ही अनमोल होती है जितनी हमारी व्यक्तिगत संपत्ति । जिस तरह हम अपनी व्यक्तिगत संपत्ति की हानि नहीं सह पाते उसी तरह हमें सार्वजनिक संपत्ति की हानि भी सहन नहीं करनी चाहिए किंतु वास्तविकता इसके बिलकुल विपरीत है । प्राय: देखा यह गया है कि अनुशासनहीनता के कारण अनेक बार कुछ नागरिक प्रशासन या सरकार से अपनी माँगों को मनवाने की जिद में सार्वजनिक संपत्ति का नुकसान कर बैठते हैं । उनकी

❑ ऊपर आए मुहावरों एवं कहावतों पर विद्यार्थियों से चर्चा करें । इनके अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कराएँ । इसी तरह के अन्य कहावतें और मुहावरे पाठ्यपुस्तक के अन्य पाठों से निकालकर संग्रहीत करें ।

आँखों पर स्वार्थ की पट्टी बँधी होती है । अपने लाभ को देख पाने की जबरदस्त लालसा के आगे उन्हें यह दिखाई ही नहीं देता कि वे स्वयं ही अपने हाथों अपनी संपत्ति को हानि पहुँचा रहे हैं । इस हानि का खामियाजा न केवल उन्हें बल्कि अन्य नागरिकों को भी भुगतना पड़ेगा ।

किसी भी राष्ट्र में सार्वजनिक संपत्ति देश के नागरिकों को अधिक-से-अधिक सुविधा प्रदान करने के उद्‌देश्य से ही निर्मित की जाती हैं । जैसे- देश में रेल सुविधा, बस सुविधा, हवाई सुविधा, नगरों में खुली जगहों पर बनाए गए उद्‌यान, खेल के मैदान, स्टेडियम इत्यादि सभी सार्वजनिक संपत्ति के ही उदाहरण हैं । अब यदि स्वार्थ और क्रोध के अंधेपन में कुछ नागरिकों ने रेल यातायात को खंडित किया, बसों के आवागमन पर रोक लगाई अथवा उद्‌यानों को उजाड़ा तो इन सारी गैरजिम्मेदाराना हरकतों से कितने लोगों की सुविधाएँ प्रभावित होंगी, इसपर ऐसे लोगों को विचार करना चाहिए । आश्चर्यजनक बात तो यह है कि जो लोग इस तरह की विघातक कृतियों में सहभागी होते हैं, वे स्वयं अपने परिवार में अपने बच्चों को शिक्षा देते हैं कि अपनी माँग पूरी करवाने के लिए इस तरह गुस्सा प्रकट करते हुए जिद नहीं करनी चाहिए ।

समय-समय पर देश के साहित्यकारों, संतों, प्रवचनकारों और नेताओं ने सार्वजनिक राष्ट्रीय संपत्ति की महत्ता का बखान नागरिकों के समक्ष किया है और नागरिकों पर उसका प्रभाव पड़ा भी है । यदि पुराने समय से वर्तमान समय तक हम दृष्टि डालें तो पाएँगे कि निश्चित ही इस तरह की विघातक कृतियों के प्रमाण में पहले की तुलना में जबरदस्त कमी आई है । फिर भी इस स्थिति में और अधिक सुधार की आवश्यकता है । कुछ समय अवश्य लगेगा पर यह हो जाएगा । इसके लिए हमें देश की सरकार पर निर्भर न रहते हुए स्वयं ही इस जिम्मेदारी का वहन करना पड़ेगा । हम स्वयं सार्वजनिक और राष्ट्रीय संपत्ति के महत्त्व को समझें व

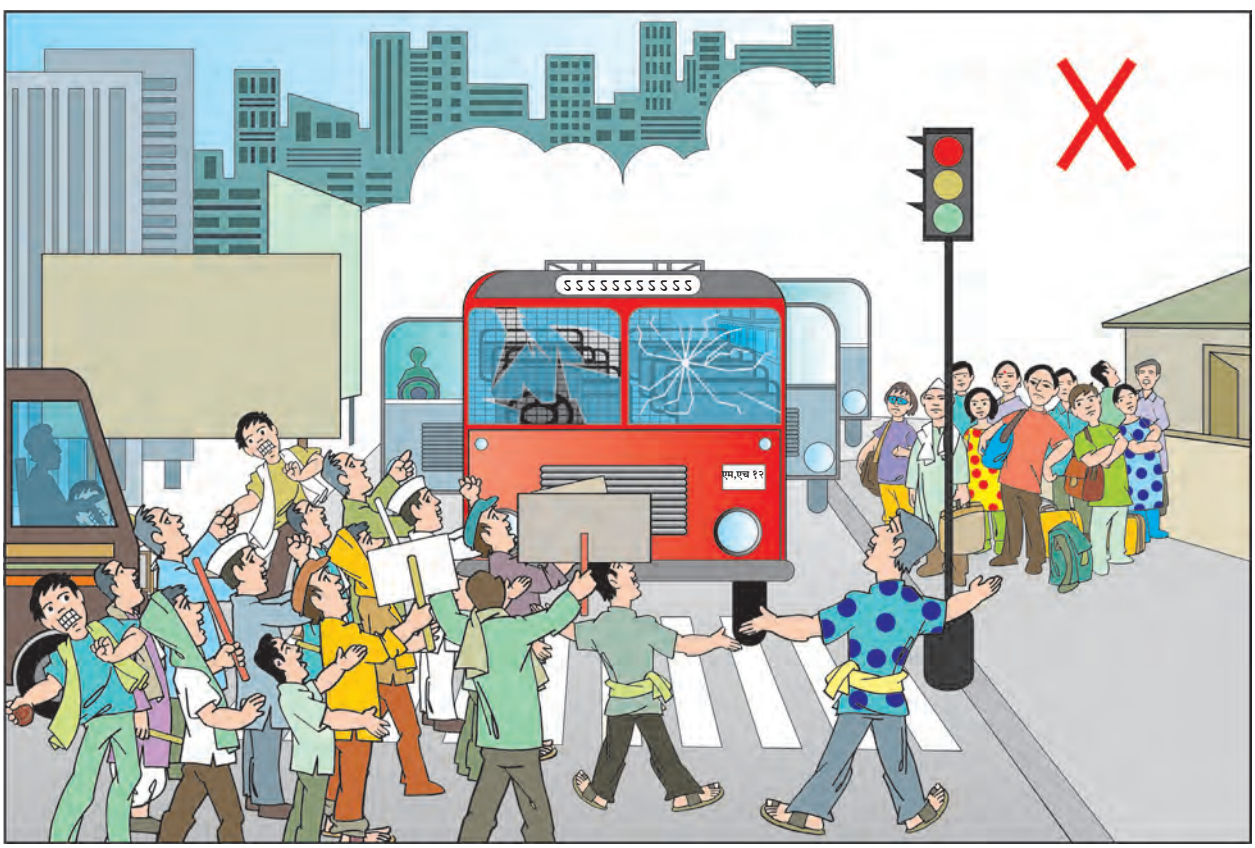

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ पाठ के परिच्छेदों का मुखर वाचन करें । किसी जानकारी को अंतरजाल से कैसे प्राप्त किया जा सकता है, मार्गदर्शन करें । अंतरजाल (इंटरनेट) द्‌वारा कौन-कौन-सी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं; इसपर चर्चा करें ।

खोजबीन

पनडुब्बी क्या और कैसे कार्य करती है? अंतरजाल की सहायता से बताओ ।

अन्य नागरिकों को भी समझाएँ तथा राष्ट्रीय संपत्ति को हानि पहुँचाने के बजाय उसका भरपूर उपयोग करें । सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार से अधिक हमारी है, इस बात को स्वयं भी समझें औरों को भी समझाएँ ।

इसी तरह देश भर की पाठशालाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को यह शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए कि राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा कैसे की जाए । प्रत्येक परिवार में माता-पिता अपने इस नैतिक कर्तव्य को समझें कि उन्हें अपने बच्चे में संस्कार के रूप में राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा की जिम्मेदारी पिरोनी है । इस प्रकार से जब पाठशालाओं और परिवारों के माध्यम से यह शिक्षा देश की भावी पीढ़ी को दी जाएगी तो हमारे देश का भविष्य अपने आप सुरक्षित हो जाएगा । देश का बच्चा-बच्चा जान जाएगा कि सार्वजनिक राष्ट्रीय संपत्ति का महत्त्व क्या है? वास्तव में यह बात हर एक को समझनी चाहिए कि देश के ये सार्वजनिक स्थल, ऐतिहासिक स्थल, पौराणिक स्थल आदि राष्ट्र की शान हैं । इन्हें देखने के लिए दूर-दराज देशों के लोग भी हमारे देश में आते हैं । राजस्थान के गुलाबी महल, दिल्ली का लालकिला, आगरा का ताजमहल, महाराष्ट्र के किले और गढ़ ये सारे के सारे ऐतिहासिक धरोहर हैं । इनसे देश का इतिहास जुड़ा है । ठीक इसी प्रकार ये सभी देश के विविध शहरों और गाँवों की सभ्यता के परिचायक हैं । सार्वजनिक स्थलों की वास्तु, वहाँ की अत्याधुनिक सुविधाएँ , शहर के सौंदर्य और समृद्धि की जान हैं । अब इन समृद्ध स्थानों की सुरक्षा का जिम्मा नागरिकों का भी उतना ही बनता है जितना प्रशासन का । आखिर उन सुविधाओं का पूरा-पूरा लाभ नागरिकों को ही तो मिलता है । यदि सारे नागरिक और उनके बच्चे सब इस महत्त्वपूर्ण बात को समझ जाएँ तो फिर समस्या ही समाप्त हो जाएगी । तो आओ सारे मिलकर कहें-

राष्ट्र संपदा देश की, नागरिकों की शान ।
सदा सुरक्षित यह रहे, रखना इसका ध्यान ।।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

लालसा = उत्कट इच्छा
खामियाजा = दुष्परिणाम
विघातक = नुकसानदायक
बखान = गौरवपूर्ण वर्णन
धरोहर = थाती, अमानत

जरा सोचो तो ... लिखो ।

यदि सार्वजनिक अस्पताल न होता तो ... लिखो ।

स्वयं अध्ययन

देश की सार्वजनिक संपत्ति कौन-कौन-सी है? लिखो ।

सुनो तो जरा

मोगली की कहानी सुनो और कक्षा में सुनाओ ।

बताओ तो सही

ऋतुओं पर चर्चा करते हुए प्रत्येक ऋतु की विशेषताएँ बताओ ।

वाचन जगत से

अपने मनपसंद खिलाड़ी के बारे में पढ़ो । उनके बारे में कक्षा में वर्णन करो ।

मेरी कलम से

मोबाइल अभिशाप या वरदान लिखो ।

* कारण बताओ

१. अनुशासन सबसे बड़ी समस्या बनी है ।
२. सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा की ओर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए ।

सदैव ध्यान में रखो

अंतरजाल का उपयोग सही अध्ययन के लिए करो ।

अध्ययन कौशल

ऐतिहासिक धरोहर की जानकारी प्राप्त करो और लिखो ।

विचार मंथन

।। न करो उपयोग मनमाना, सार्वजनिक संपत्ति है बड़ा खजाना ।।

भाषा की ओर

चित्र में दिए गए यातायात के संकेत देखो तथा इन सांकेतिक चिह्नों का अर्थ क्या है, लिखो ।

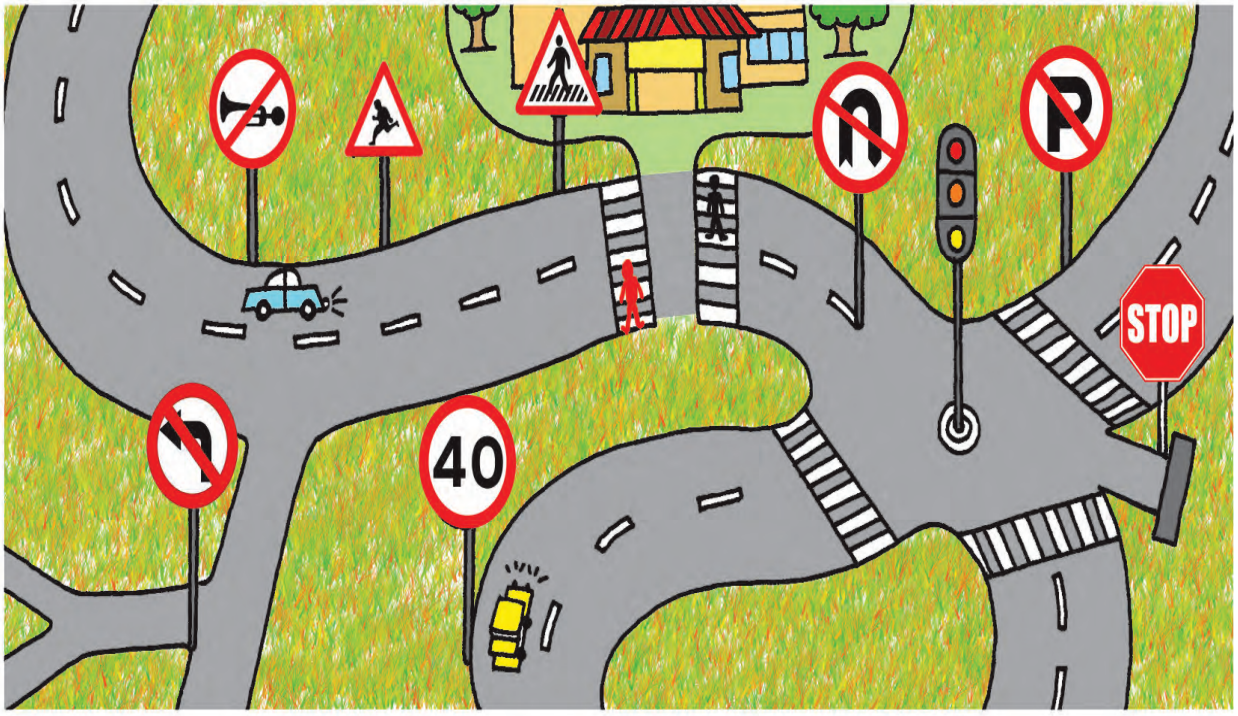

१. ----------

२. ----------

३. ----------

४. ----------

५. ----------

६. ----------

७. ----------

८. ----------